ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 66 अंक 9 मई 2019 वैशाख 2075 वार्षिक मूल्य 150 रु०

देशभक्त शूरवीर महाराणा प्रताप

जिन्होंने अकबर जैसे शक्तिशाली बादशाह के सामने कभी सिर नहीं झुकाया
और सदा आत्मसम्मान की रक्षा की।

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :66 अंक : 9
मई 2019 विक्रमाब्द 2075
दयानन्दाब्द 195 कलिसंवत् 5118
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,119

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	मूर्तिपूजा और आर्यसमाज...	5
4.	सार्वदेशिक आर्यवीर...	9
5.	गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य...	10
6.	आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय...	11
7.	सुधारक के ग्राहकों...	11
8.	अन्धविश्वास की कथा...	12
9.	क्या जीवित व्यक्ति...	15
10.	डॉ० रघुवीर वेदालंकार...	16
11.	हल्दी घाटी का परिचय...	18
12.	क्या जीवित व्यक्ति...	15
13.	ऋतुसम्बन्धी एवं...	21

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

इ दमु च्छ्रे यो अवसानमागां,
शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्।
असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु,
न वै त्वा द्विष्मो अभयं नो अस्तु।।

अथर्व० 16.14.1।।

विनय

हे मेरे भाई! मैंने अब तक तुमसे बहुत द्वेष किया, खूब दुश्मनी की। तुमने मुझे नुकसान पहुंचाया तो बदले में मैंने तुम्हें पहुंचाया, तुमने फिर उसका बदला लिया तो मैंने उसका प्रत्युत्तर दिया, इस तरह हमारी द्वेषाग्नि दिनोंदिन बढ़ती ही गयी है, भयंकर रूप धारण करती गयी है। इस द्वेष से हम दोनों ही का बहुत नुकसान हो चुका है, हम शीर्ण हो चुके हैं। मैं देखता हूं कि क्रोध में आकर दांत पीसते हुवे उत्तर का प्रत्युत्तर देते जाने का, ईंट का जवाब पत्थर से देते जाने का, कहीं अन्त नहीं है कि सिवा इसके कि हम दोनों का शीघ्र ही पूरा विनाश होजाय। इसलिये कल्याण इसी में है कि अब हम इसे खतम करें। हम में से कोई एक अब उत्तर का प्रत्युत्तर न देकर, क्रोध का जवाब क्रोध में न देते हुवे शान्ति में देकर, इसमें विराम लगा देवे। इसी में कल्याण है, निश्चय से इसी में कल्याण है। इसी तरह यह बढ़ती जाती हुई, हमारा नाश करनेवाली क्रोधाग्नि शान्त होगी। द्वेष कभी प्रतिद्वेष से शान्त नहीं होता है। अतः तुम तो चाहे अब भी मुझसे द्वेष करो, मुझे चाहे कितनी हानि पहुंचाओ, पर मैं अब उसका जवाब नहीं दूंगा। मैं आज इस द्वेष-परम्परा का अवसान करता हूं, आज से तुम मेरे शत्रु नहीं हो, तुम तो मेरे भाई हो। मेरे हृदय के किसी कोने में भी अब तुम्हारे प्रति द्वेष का लेश नहीं है। देखें, अब तुम मुझसे कब तक द्वेष करते रहोगे, कर सकोगे। मैं तो अब तुम्हारे क्रोध को, तुम्हारे क्रोध-प्रेरित सब नुकसान को प्रेमपूर्वक सहता ही जाऊँगा; प्रेम ही करता जाऊँगा। मैं आज अपने द्वेष के सब शस्त्र फेंककर इस दिशा में पूरी हार मानकर निश्चिन्त होगया हूं। द्वेष खतम करते ही मैं तो आज बड़ा विश्राम अनुभव कर रहा हूं। अब जब कि मैंने इस कल्याण के मार्ग का अवलम्बन किया है तो, हे 'द्यौ' और पृथिवि! अब तुम भी मेरे लिये कल्याणकारी हो जावो। मेरे अन्तःद्वेष के कारण अब तक यह संसार भी मुझे तपता अनुभव हुवा करता था। पर अब तो यह सब आकाश और भूमि, आसमान और जमीन, यह सब संसार के लिये कल्याणमय होजाय। हे भाई! केवल तुम्हारे प्रति ही नहीं, किन्तु किसी भी व्यक्ति के प्रति आज से मेरा द्वेष नहीं रहा है। अतः ये सब विस्तृत दिशायें मेरे लिये आज से बिल्कुल असपत्न होगई हैं, शान्त और सुखदायिनी होगई हैं। पहिले मैं शत्रुओं के भय-त्रास, या आशंका में सदा उलझा रहता था, पर द्वेष छोड़ देने से सब के प्रति ही प्रेम हो हाने से आज मैं सर्वथा निर्भय होगया हूं। मैं आज सब दिशाओं और सब संसार में प्रेम, अद्वेष, मिठास, आनन्द, निश्चिन्तता और निर्भयता को ही अनुभव कर रहा हूं।

शब्दार्थ

(इदं उत् श्रेयः) अब यह ही कल्याणकर है कि **(अवसानं आ अगां)** मैं सब समाप्ति पर आ जाऊँ, द्वेष-परम्परा का विराम कर दूं। अतः हे शत्रु! **(त्वां)** तेरे साथ **(न वै द्विष्मः)** मैं तो द्वेष करना छोड़ ही देता हूं। **(द्यावापृथिवी)** द्यौ और पृथिवी भी **(मे)** मेरे लिये **(शिवे अभूताम्)** अब कल्याणकारी होजायँ, **(प्रदिशः मे असपत्नाः भवन्तु)** सभी दिशायें मेरे लिये शत्रुरहित होजायँ **(नः अभयं अस्तु)** मेरे लिये अब अभय ही अभय होजाय।

सम्पादकीय

50 वर्ष के पश्चात् परिणाम सामने आयेगा

सन् 1830 के दशक में स्काटलैंड निवासी और ईस्टइंडिया कम्पनी की ओर से भारत में ईसाइयत का प्रचार करने वाले विलियम एडम ने बंगाल और बिहार के क्षेत्रों का निरीक्षण किया था। उस निरीक्षण का परिणाम उसने यह निकाला कि इन स्थानों पर एक लाख से अधिक पाठशालायें थीं, उनमें लगभग 20 लाख बालक शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। इन पाठशालाओं का व्यय सम्पन्न और प्रतिष्ठित लोगों द्वारा वहन किया जाता था। बच्चों से जो शुल्क लिया जाता था, वह एक समान न होकर, उनकी पारिवारिक स्थिति के अनुसार कम-ज्यादा होता था। इन छात्रों को गणित, इतिहास आदि के साथ नैतिक शिक्षा और देशभक्ति की शिक्षा भी दी जाती थी।

जब यह रिपोर्ट ईस्ट इंडिया कम्पनी के पास पहुंची तो उसने इसे अपने स्थायी शासन के लिए घातक समझा और इस प्रचलित शिक्षा पद्धति के स्थायी प्रतिकार के लिए ब्रिटेन के प्रसिद्ध इतिहासकार जेम्स स्टुअर्ट मिल से एक पुस्तक लिखवाकर विश्वभर में उसका खूब प्रचार करवाया, पुस्तक का नाम था- ''हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इंडिया''। पुस्तक क्या थी- भारत के विरुद्ध विषवमन करने वाला असत्य का पिटारा थी। उस पुस्तक में भारतीयों को अन्धविश्वासी, पिछड़े, अत्याचारी एवं पशुसमान बताया गया था। साथ ही यह गर्वोक्ति भी की गई थी कि पश्चिम के दर्शन, विज्ञान एवं गणित के सामने भारतीयों का ज्ञान नगण्य है तथा हम अंग्रेजों का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि इस ज्ञान से भारत को भी अवगत कराया जाये।

इस प्रकार भारत के विरुद्ध दुष्प्रचार का व्यापक अभियान चलाकर इस पुस्तक में लिखे विचारों को क्रियात्मक रूप देने का बीड़ा उठाया लार्ड मैकाले ने। लार्ड मैकाले की दूरदृष्टि ने भारत के युवकों को नौकर, गुलाम तथा क्लर्क बनने का पाठ पढाया और उन्हें आर्थिक दृष्टि से लालच देकर अंग्रेजी साम्राज्य को सुदृढ बनाने के लिए तैयार करना प्रारम्भ कर दिया। लार्ड मैकाले की यह योजना आज 184 वर्ष बाद भी भारत में अबाधगति से चल रही है। भारत के कोमलमति बालकों के मस्तिष्क में भारत के पूर्वजों की वही दूषित छवि अंकित की जा रही है, जिसे अंग्रेज चाहते थे।

अंग्रेजों की इस कुटिल चाल को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समझा और इस के प्रतिकार स्वरूप आर्षपाठविधि के द्वारा शिक्षा देने का क्रियात्मक रूप से भी यत्न किया। उसे विस्तृत रूप दने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी

स्वामी दार्शनानन्द जी और स्वामी ओमानन्द जी आदि ने सफल प्रयत्न किये। वे प्रयत्न समयानुसार कुछ तो शिथिल होगये, कुछ बन्द हो गये, कुछ जैसे-तैसे अभी भी चालू हैं।

यदि भारत को इस पाश्चात्य दूषित शिक्षा प्रणाली से मुक्त कराना है तो आज जो बीजारोपण किया जायेगा, **वह पचास वर्ष बाद फलीभूत होगा।**

करना यह है कि भारत सरकार इंगलिश के माध्यम से दी जाने वाली प्रचलित शिक्षा प्रणाली को सर्वथा बन्द करे और इसके स्थान पर राष्ट्रभाषा के माध्यम से जीविका प्राधानता वाली और नैतिक शिक्षा से युक्त भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को तुरन्त लागू करे। प्रचलित इतिहास ग्रन्थों का पढ़ाना सर्वथा बन्द करके भारत का सच्चा इतिहास पढाना प्रारम्भ करे। इस प्रकार के प्रयत्न लम्बे समय से गुरुकुल पद्धति से शिक्षा देने वाली संस्थायें कर तो रही हैं, परन्तु सरकार उन्हें प्रोत्साहन नहीं देती, अत: जीविका के अभाव में ऐसे गुरुकुल भी विवश होकर सरकारी तन्त्र की शरण में चले जाते हैं।

भारत सरकार के शिक्षा विभाग का यह उत्तरदायित्व बनता है कि बालकों को ऐसी शिक्षा दी जाये जिससे भ्रम की स्थिति न रहे, अत: पाखण्ड, अवतारवाद, चरित्रहनन करने वाले, मूर्तिपूजा के पोषक, फलित ज्योतिष और भूतप्रेतबाधा तथा सूर्यादि ग्रहों से पीड़ा मानने वाले और गुरुडम को बढावा देने वाले साहित्य को पाठ्यक्रम से बहिष्कृत करे। आज स्कूलों में अक्षरज्ञान वाली पढाई करने वाले छात्रों के माता-पिता और अभिभावकों की यह शिकायत रहती है कि हमारे बच्चे बिगड़ते जा रहे हैं, कहना नहीं मानते, उच्छृंखल होने लग रहे हैं, इन्हें नैतिक शिक्षा तथा भारतीय प्राचीन परम्परा की जानकारी नहीं है। सारा दिन टी.वी., मोबाइल और कम्प्यूटर से चिपके रहना पसन्द करते हैं, हम दोनों पति-पत्नी जीविका हेतु सर्विस करते हैं, पीछे से बच्चे क्या करते रहते हैं, इससे हम तो अनभिज्ञ रहते हैं, परन्तु इनको पथभ्रष्ट करने वाले इनके तथाकथित मित्रों को इनकी सब गतिविधियां मालूम रहती हैं।

बच्चों की इस प्रवृत्ति से दु:खी होकर अनेक माता-पिता अपने बच्चों को सुधारने की दृष्टि से गुरुकुलों का आश्रय लेते हैं, वह भी उतने ही समय के लिए जब तक कि बालक सुधर नहीं जाता।

यदि भारत को सही रूप में शुद्धाचरण वाला आदर्श भारत बनाना है तो भारत को अंग्रेजी भाषा, शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति, खान-पान और रहन-सहन से मुक्त करके शिक्षा पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा। सर्वथा अवैज्ञानिक और व्याकरण की दृष्टि से भ्रष्ट अंग्रेजी भाषा के स्थान पर पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति वाली संस्कृत और हिन्दी भाषा के

माध्यम से शिक्षा देनी होगी। प्रान्तीय भाषाओं के माध्यम से भी राष्ट्रभाषा को साथ-साथ रखते हुए भी यह शिक्षा दी जा सकती है।

आज का किया गया यह प्रयत्न कम से कम दो पीढियों के पश्चात् फलदायक सिद्ध होगा, क्योंकि अब जो शिक्षित कहे जाने वाले व्यक्ति हैं या जो वर्तमान में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उन्हें तो वही दूषित शिक्षा प्रणाली वाली शिक्षा दी जा रही है, **ये लोग पचास वर्ष पश्चात् लगभग समाप्त हो जायेंगे** और नई पद्धति से शिक्षित पीढी धीरे-धीरे युवा होती जायेगी और पचास वर्ष बाद प्रायः करके सर्वत्र भारतीय शिक्षा पद्धति वाली जनता दृष्टिगोचर होगी। पाखण्ड और अविद्यान्धकार फैलाने वाली शिक्षा के अभाव में भारतीय जनता शुद्धाचरण वाली और बुद्धिपूर्वक विचार करने वाली होगी। भाग्य पर भरोसा करके बैठे रहने वाले अकर्मण्य लोगों का अभाव हो जायेगा। अज्ञानी गुरु से नाममात्र धारण करके निन्दिताचरण करने से भी भय न मानने वाले लोगों की संख्या क्रमशः कम होती जायेगी। जड़मूर्ति के आगे सिर झुका कर भगवान् को प्रसन्न हुआ मानकर पाप से निवृत्ति मानने की भावना वाले लोगों का भी अभाव हो जायेगा।

जो लोग मनः कामना की पूर्ति हेतु विविध प्रकार के रंगों वाले झण्डे उठाये हुए सैंकड़ों मील पैदल जाकर अभीष्ट सिद्ध करना चाहते हैं तथा जो विभिन्न प्रकार के रंगों वाले नगो से युक्त अंगूठियों के धारण करने ही अनिष्ट से छुटकारा पाने की भावना रखते हैं और इनके धारण करने से ही क्रूर ग्रहों से मुक्ति चाहते हैं उनका अज्ञान प्राचीन भारतीय शिक्षा के ग्रहण से अवश्य मिट जायेगा और भारत की जनता भ्रष्टाचार, अनाचार, व्यभिचार और दुराचार जैसी अनैतिक और पथभ्रष्ट करने वाली बातों से सर्वथा दूर हो जायेगी, फलतः भारत पुनः सच्ची शिक्षा के कारण विश्व का गुरु कहलाने का अधिकारी हो जायेगा।

यह तभी होगा जब समाज सुधारकों के साथ-साथ शासकों का भी पूर्ण समर्थन और सहायोग मिलेगा। अन्यथा केवल समाज सुधारक तो आज भी प्रयत्नशील रहते ही हैं। जैसे मैकाले को राजसत्ता का पूर्ण सहयोग प्राप्त था उसी प्रकार भारत को सच्चे धर्मोपदेशक और नई शिक्षानीति के आयोजकों को राजकीय प्रश्रय जब मिलेगा तभी पूर्ण सफलता मिलेगी। भारतीयता के पोषक राज्याधिकारियों का होना तथा भारत की गरिमा के पोषक पाठ्यक्रम को लागू करना सबसे आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। ऐसा होने पर **पचास वर्ष पश्चात्** भारत का आन्तरिक मानचित्र आदर्श वाला होगा। उसे देखना मेरे लिए तो असम्भव होगा, परन्तु भारत का भाग्योदय हुआ होगा, यह अगली पीढियां प्रत्यक्ष करेंगी।

– विरजानन्द दैवकरणि
मो० – 9416055702

मूर्तिपूजा और आर्यसमाज - एक चिन्तन

आप सब मूर्तिपूजा से तो भली-भाँति परिचित ही हैं। हमारे देश में अनेक प्रकार से सम्बोधित किए जाने वाले देवी-देवताओं के मन्दिर बना कर, उनमें उनकीं मूर्तियां स्थापित कर उनकी पूजा की जाती है। आर्यसमाज इस प्रकार की पूजा का विरोध करता है। क्योंकि आर्यसमाज एक ऐसी संस्था है जहाँ हमें सत्य की महत्ता और सत्य के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराया जाता है। आर्यसमाज किसी भी व्यक्ति की निजी बपौती नहीं वह तो प्रत्येक उस मनुष्य के लिए है जो बिना किसी स्वार्थ के, जाति भेद भुलाकर परोपकार कार्य अर्थात् पुरुषार्थ करता है। यह एक सर्वाभौमिक सिद्धान्तों वाली संस्था है। जो सम्पूर्ण संसार में रहने वाले प्रत्येक मानव के लिए हितकारी है। चाहे वह किसी भी मत या सम्प्रदाय से संबन्ध रखने वाला क्यों न हो। आर्यसमाज दिखावे में विश्वास नहीं करता। मैंने जबसे आर्यसमाज के नियमों व उद्देश्यों को जाना है तब से यही जाना है कि वास्तविक और सही, मूर्तिमान् माता-पिता आदि की पूजा केवल आर्यसमाज में ही करनी बताई जाती है। यह जो सच्ची 'पंचायतन' वेदोक्त और वेदानुकूल देव पूजा और मूर्ति पूजा है सुनो-

'प्रथम माता 'मूर्ति... पूजनीय देवता', अर्थात् संतानों को तन-मन-धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। दूसरा-पिता सत्कर्त्तव्य देव, उसकी भी माता के समान सेवा करनी। तीसरा-आचार्य जो विद्या दान देने वाला है, उसकी तन-मन-धन से सेवा करनी। चौथा-अतिथि जो विद्वान्, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला, जगत् में भ्रमण करता हुआ सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है, उसकी सेवा करें। पांचवाँ-स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्वपत्नी पूजनीय है। ये पांच मूर्तिमान् देव जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्य शिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर की प्राप्ति होने की सीढ़ियां हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्ति पूजते हैं वे अतीव वेद विरोधी हैं।'

-सत्यार्थ प्रकाश समु०11

जैसे किसी महान् व्यक्ति की मूर्ति को देखने से हमरा ध्यान उसके जीवन चरित्र पर जाता है और उसके सात्विक जीवन से प्रेरणा मिलती है यानि मूर्ति उस महान् पुरुष के जीवन के भतीर झांकने का माध्यम बनती है और वह हमारे जीवन को उत्तम बनाने का अवसर प्रदान करती है। इसलिए उस महान् पुरुष का चित्र घर में, दुकान में व कार्यालय में रखना। आर्यसमाज सेवी ने कोई धार्मिक या शैक्षणिक संस्था या सामाजिक स्थान बनाया हो जिसमें उसका तन, मन, धन लगा हो तो उसमें उस समाज सेवी की मिट्टी या पत्थर की मूर्ति लगाने का भी विरोधी नहीं, पर उस महान् पुरुषों के चित्र जिनके देखने मात्र से हमारे मन में समाज, राष्ट्र व मानवता के प्रति प्रेम उमड़ता हो और अपने जीवन को सुधारने की प्रेरणा मिलती हो ऐसे आदर्श व्यक्ति का चित्र रखना घर की शोभा बढ़ाना ह। हमारे घरों में

महापुरुषों के चित्र अवश्य लगे होने चाहिए जिनके देखने से बच्चों के भाव व विचार अच्छे बनें, मन प्रसन्न रहे और उसका प्रभाव बच्चे पर भी अच्छा पड़े और बच्चा उन महान् पुरुषों की भांति महान बने। हम गंदे चित्र न लगाकर ऐसे चरिवान्, विद्वान्, त्यागी, तपस्वी, परोपकारी व जिनका जीवन समाज, राष्ट्र व मानवता की सेवा के लिए समर्पित रहा है ऐसी महान् आत्माओं के चित्रों को अपने घरों मे लगाकर रखें। हम उन्हें देखेंगे तो अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति स्वाभिमान राष्ट्र की सेवा का भाव जगेगा। अन्यायी व पापियों का दमन करने का प्रोत्साहन मिलेगा, वैदिक पथ पर चलने की शिक्षा मिलेगी। ईमानदारी, करुणा, सहृदयता, उदारता आदि मनुष्योचित भाव जागेंगे। इसलिए ऐसे चित्र जरूर लगाने चाहिए। जैसे यदि हम श्री राम का चित्र लगाते हैं तो हम अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए मर्यादा में रहने का ध्यान रखेंगे। यदि श्री कृष्ण का चित्र लगाते हैं तो हममें पूर्ण धैर्य व पराक्रम के साथ अन्यायी व पापियों को दमन करने का उत्साह जागेगा। यदि हम आदि शंकराचार्य का चित्र लगाते हैं तो हमारे भीतर अपने धर्म की रक्षा के लिए कटिबद्ध होने के भाव जागेंगे। यदि बुद्ध व महावीर के चित्र लगायेंगे तो हमें सत्य, अहिंसा और वैराग्य की प्रेरणा मिलेगी। यदि हम वीर शिवाजी, महराणा प्रताप व गुरु गाविंद सिंह के चित्र लगाते हैं तो हमें अपने स्वाभिमान को रखते हुए अन्यायी विधर्मियों से लड़ने की प्रेरणा मिलेगी। जब हम सुभाषचंद्र बोस, चंद्रशेखर, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाखाँ, वीर सावरकर का चित्र देखते हैं तो हमें ब्रह्मचर्य, संयम, त्याग, तपस्या के बल पर अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए घोर संकटों को सहने की शक्ति मिलती है।

मैंने उपरोक्त महान् पुरुषों की पत्थर की मूर्ति बनाने की बात लिखी, परन्तु इस मामले में उदासीन रहे। हमने अपने महान् पुरुषों के नाम से सड़क, मार्ग, पार्क, औषधालय, स्कूल आदि तो बनाये परंतु मिट्टी, पत्थर या धातु की मूर्ति नहीं लगाई जिससे हमारे महान् पुरुषों को जन-साधारण कम जानता है और आर्यसमाज का नाम भी कम हो पाया। कारण, स्टेच्यू देखने से मनुष्य के दिल व दिमाग पर स्थाई स्मृति बन जाती है जैसे गाँधी, नेहरू, इंदिरा, अम्बेडकर आदि की बनी हुई है। हमारे कुछ आर्यसमाजी भाई कहेंगे कि स्वामी जी ने अपनी मूर्ति या किसी प्रकार का स्मृति चिह्न बनाने की मनाही की है। यह उनकी महानता थी पर हमें महापुरुषों का स्टेच्यू बनाना ही चाहिए। जब हम समाज व अपने घरों तथा प्रतिष्ठानों में उनके चित्र लगाते हैं तो स्टेच्यू मैं भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।, हां उन पर फूल चढाना, उनकी पूजा करना गलत है।

आर्यसमाजों में भी आर्यों के घरों में भी जहाँ आर्य नेताओं स्वामी विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा नारायण स्वामी, महात्मा हंसराज, पं० लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी आदि की तस्वीरें लगी मिलती हैं वहीं पर राम, कृष्ण, शिवाजी, महाराणा प्रताप व अन्य ऐतिहासिक पुरुषों के चित्र भी मिलेंगे। मूर्ति जड़ है, अचेतन है उसको अपने दु:ख, सुख का कोई ज्ञान नहीं। यदि कोई उस मूर्ति को ईश्वर समझकर अपनी

स्वार्थ सिद्धि के लिए पाखण्ड स्वरूप उसकी धूपबत्ती या दीपक से आरती उतारना, चंदन लगाना, भोग लगाना, इतना हीं नहीं मूर्ति को सुलाना, उसको पंखा डुलना, नहलाना आदि कार्य करता है तो उसे आर्यसमाज निरर्थक व आडम्बर मानता है। आर्यसमाज चित्र की पूजा नहीं करता बल्कि चित्र के पीछे उसका प्रेरणादायक चरित्र है उसकी पूजा करता है। पूजा का तात्पर्य धूपबत्ती दिखाकर आरती उतारना नहीं, बल्कि उस महान् व्यक्ति के चरित्र को अपने जीवन में धारण करना ही उस मूर्ति की पूजा है। जैसे हम लक्ष्मी और सरस्वती की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करेंगे तो हमारे पास धन और विद्या किसी हालत में नहीं आ सकती। धन के लिए हम ईमानदारी से मेहनत कार्य करेंगे तो धन का आना निश्चित है। इसी प्रकार विद्या भी हम लगन और परिश्रम के साथ सब व्यसनों से दूर रहकर प्राप्त करेंगे तो विद्या निश्चित ही आएगी। इसलिए वही रास्ता हमें अपनाना चाहिए जिससे उसकी प्राप्ति हो। किसी चीज का सदुपयोग करके उससे लाभ उठाना ही उसकी पूजा है, चाहे वो जड़ हो या चेतन। जैसे हम अपने चेतन माता-पिता की पूजा करना चाहते हैं तो हमें उनकी धूपबत्ती से आरती उतारने की आवश्यकता नहीं। उनकी आज्ञा का पालन करते हुए उनकी सेवा व सुश्रूषा करना ही माता-पिता की पूजा है और जड़ स्वरूप पुस्तक की पूजा उसको मन लगाकर पढ़ना है। इस प्रकार सब कार्यों में यही बात लागू होती हैं। चेतन स्वरूप ईश्वर की पूजा करना भी हमारे नित्यप्रति के कार्यों का एक हिस्सा है जिसे हम दोनों समय घर में दीया-बाती जलाकर या मंदिर में जाकर काल्पनिक देवी-देवताओं को भोग लगाकर धूपबत्ती और दीपक आदि से उनकी आरती उतारकर पूजा हो गई ऐसा मान लेते हैं जबकि हमारे ऋषियों ने ईश्वर उपासना का माध्यम अष्टांग योग बताया जिसमें हम यम, नियमों का पालन करते हुए यानि अपने आपको भीतर व बाहर से शुद्ध रखते हुए उसके बाकी अंग-आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान को करते हुए समाधि अवस्था में पहुँचकर ईश्वर के सांनिध्य में बैठकर उसके परम आनंद की अनुभूति करते हैं यही ईश्वर की सच्ची उपासना या पूजा है, इसके कारण मनुष्य में मनुष्योचित एवं देवताओं के गुणों का आविर्भाव सदा बना रहता है। इसके अलावा उन्नति का अन्य कोई मार्ग नहीं। लगभग 550 वर्ष पूर्व सिक्खों के गुरु और उनका बनाया ग्रन्थ भी न था। तब उनके गुरुद्वारे और उपासना का प्रचार भी कैसे होता? अत: यह प्रश्न होता है कि गुरुओं के पूर्वज ईश्वर की भक्ति किस प्रकार करते थे? इसी प्रकार 1500 वर्ष पूर्व हजरत मुहम्मद साहिब भी न थे तथा ईसाई भी न थे और न गिरजाघर ही थे तब ईसाइयों का भक्ति करने का प्रकार भी कैसे होता? लगभग 3000 वर्ष पूर्व जैनियों के तीर्थंकर भी न थे तो उनके मन्दिर और मूर्ति भी कैसे बनते? उस समय तीर्थकरों के पूर्वज ईश्वर की पूजा कहाँ और कैसे करते थे? तथा 5000 पूर्व कृष्ण जी भी न थे, तो उनकी मूर्ति और कृष्ण मन्दिर भी कैसे बनते। अत: प्रश्न उठता है कि श्रीकृष्ण जी के पूर्वज ईश्वर की उपासना किस प्रकार करते थे? जब राम न थे तो उनके पूर्वज

तथा महादेव जी के पूर्वज किस प्रकार ईश्वर की भक्ति करते थे? क्योंकि राम एवं महादेव के मन्दिर तथा मूर्ति तो उनके पश्चात् ही बनने सम्भव हुए हैं इत्यादि-सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि जब ये मत और मतों के संचालक न थे तब एक ही निराकार ईश्वर की उपासना होती थी। जैसे कि आज भी वैदिकधर्मी करते हैं। इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्तम एवं सर्व प्राचीन प्रकार वैदिक धर्म में ही है। जो मनुष्य ईश्वर की उपासना करना चाहे वह उपरोक्त यम और नियमों का पालन अवश्य करे। जैसे विद्यार्थी परीक्षा पास करने के लिए अपने पाठ्यक्रम (कोर्स) की पुस्तकें याद करके ही उत्तीर्ण होते हैं वैसे ही उपासक भी यम-नियम आदि योग के 8 अंगों का पालन करके ही ईश्वर को जानने योग्य होते हैं और ईश्वर उनको ही स्वीकार भी करते हैं। क्योंकि ईश्वर शुद्ध तथा न्यायकारी है। अत: अशुद्ध एवं अन्यायकारी से उसका मेल कहाँ? लोकाचार में भी जिनके गुण-कर्म-स्वभाव मिलते हैं उनकी ही मित्रता होती है। अत: ईश्वर-भक्त होने के लिए ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के सदृश ही अपने गुण-कर्म-स्वभाव बनाता हुआ शुद्ध एकान्त देश (स्थान) में जाकर आसन लगा इन्द्रियों को विषयों से रोककर अर्थात् उपासना के समय 5 कर्मेन्द्रियों तथा 5 ज्ञानेन्द्रियों को अपने वश में करके तात्कालिक उठने वाले विचारों को न लाए तथा पूर्व अनुभव किये हुए विषयों का चिन्तन भी न करे और निद्रा भी न आ जाये इस प्रकार सावधान होकर जैसे भूखे प्राणी को भोजन के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता वैसे ही परमेश्वर से मिलने की इच्छा होनी चाहिए।

महर्षि दयानंद ने ईश्वर के सच्चे स्वरूप को समझाने, पंच-महायज्ञों, सोलह संस्कारों, चारों वर्णाश्रमों, गुरुकुल पद्धिति की शिक्षा, गोमाता की रक्षा के महत्त्व को समझाने, हिन्दू समाज में फैले अज्ञान, अंधविश्वास, पाखण्ड को मिटाने व इनमें पनप रहीं कुप्रथाओं एवं कुरीतियों जैसे नारी व शूद्रों को समान अधिकार न देना, विधवाओं का पुनर्विवाह न करना, जाति को कर्म से न मानकर जन्म से मानना आदि के विरोध में आवाज उठाने तथा राष्ट्र व मानवता के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करवाने के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की है। यह सब काम वेद प्रचार से ही संभव था, इसलिए महर्षि जी ने अपने जीवन भर वेद प्रचार ही किया और आर्यसमाज भी कर रहा है। इन्हीं कामों में हिन्दुओं का हित भी निहित है। इसलिए मेरी सभी पौराणिक भाइयों से करबद्ध प्रार्थना है कि वे आर्यसमाज को अपना परिमार्जन करने वाला समझें, इसे हिन्दू धर्म का रक्षक, हितैषी व पहरेदार समझें और दोनों सनातनी व आर्यसमाजी परस्पर व्यावसायिक स्वार्थ छोड़कर कन्धे से कन्धा मिलाकर देश पर मंडराए खतरों का सामना करें ताकि देश का भविष्य उज्ज्वल हो सके। बहुत पिट चुके, बहुत लुट चुके अब भी न संभले तो कुछ भी हाथ न लगेगा।

गंगा शरण आर्य 'साहित्य सुमन'
चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मोहल्ला, ग्रमा-शाहबाद, मोहम्मद पुर, नई दिल्ली-61,
मो० : 9871644195

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर

दिनांक : 2 जून से 16 जून, 2019

स्थान : गुरुकुल शिवालिक अलियास पुर, अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अध्यक्ष स्वामी देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता में शाखानायक, व्यायाम उपशिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, 2 फोटो एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। शिविर के अनुशासन का पूर्णत: पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकता है।

प्रवेश शुल्क– शाखानायक 500 रुपये व्यायाम शिक्षक और व्यायाम उपशिक्षक 600 रुपये है। पाठ्यपुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी

आवश्यक सामान – गणवेश खाकी हाफपैंट, सफेद शर्ट, सफेद सैन्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हलका बिस्तर, थाली, लोटा एवं दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुयें।

नोट :- 1. शिविर में प्रवेश आर्यवीर श्रेणी उत्तीर्ण को ही दिया जायेगा। शिविरार्थी की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण होनी चाहिये। शिविर में प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहीं मिलेगा।

2. शिविर में सन्ध्या–यज्ञ, प्राथमिक चिकित्सा तथा व्यक्तित्व विकास का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मार्ग – अम्बाला रेलवे स्टेशन से बस स्टैण्ड पहुँचकर यमुनानगर, जगाधरी, हरद्वार जाने वाली बस से दो सड़का रोड़ पर उतरें। वहाँ से सढोरा जाने वाली बस से या श्री व्हीलर से गुरुकुल शिवालिक पहुँचें। सहारनपुर से अम्बाला जाने वाली बस से दो सड़का उतर कर संढोरा जाने वाली बस या श्री व्हीलर से गुरुकुल शिवालिक पहुँचे।

निवेदक

रवीन्द्र सिंह अध्यक्ष	**नन्दकिशोर शास्त्री निदेशक**	**प्रवीण शास्त्री**	**सत्यवीर आय**
शिवालिक ग्रुप ऑफ एजुकेशन	महामंत्री	प्रधान व्यायामशिक्षक	प्रधान संचालक
शिविर संयोजक	सार्वदेशिक आर्यवीर दल	सार्वदेशिक आर्यवीर दल	सार्वदेशिक आर्यवीर दल
9991700034	9466436220	9467071733	9414789461

गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक प्रो० महावीर राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

04 अप्रैल, भारत की राजधानी देहली में उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार के पूर्व कुलपति एवं वर्त्तमान में योगर्षि स्वामी रामदेवजी के विश्व प्रसिद्ध पतंजलि विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति, अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् प्रो० महावीर अग्रवाल, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किये गये। महामहिम राष्ट्रपति की ओर से भारतीय गणराज्य के महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीमान् वैंकया नायडू ने यह पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किया।

संस्कृत जगत् में अत्यन्त लोकप्रिय एवं सम्मानित प्रो० महावीर अनेक गरिमापूर्ण पदों को विभूषित कर चुके हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष, प्राच्यविद्या संकायाध्यक्ष, कुलसचिव, आचार्य एवं उपकुलपति आदि दायित्त्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहण करने वाले डॉ० महावीर, उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप में भी संस्कृत सेवा कर चुके हैं।

आपके सैकड़ों शोध पत्र राष्ट्रीय अर्न्तराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। अनेक राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय शोध सम्मेलनों का सफल आयोजन करते हुए आपने देश, विदेश की अनेक शोध संगोष्ठियों में मुख्य अतिथि, अध्यक्ष अथवा मुख्य वक्ता के रूप में सहभागिता की है। आपने संस्कृत के विकास, विस्तार एवं उत्थान के लिए अमेरिका, इंग्लैण्ड, बैंकाक, नेपाल आदि देशों की यात्राएं की हैं।

प्रो० अग्रवाल के निर्देशन में 70 शोधार्थी शोधोपाधि प्राप्त कर चुके हैं। शोध की सर्वोच्च डी-लिट् उपाधि से अलंकृत डॉ० महावीर की दूरदर्शन के आस्था, संस्कार, वैदिक गुरुकुलम् आदि चैनलों पर सैकड़ों वार्त्ताएं प्रसारित हुई हैं। आकाशवाणी से प्रसारित आपकी वार्त्ताओं को अत्यन्त आदर पूर्वक सुना जाता है। आपकी सौ से अधिक संस्कृत वार्त्ताएं आकाशवाणी से प्रसारित हुई हैं।

प्रो० महावीर को राष्ट्रपति सम्मान के अतिरिक्त, दिल्ली संस्कृत अकादमी से महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान से विशिष्टसंस्कृत सेवा सम्मान, वेद वेदाङ्ग पुरस्कार, आर्य विभूषण पुरस्कार, समन्वय पुरस्कार, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार आदि के अतिरिक्त अनेक राष्ट्रीय सांस्कृतिक, साहित्यिक संस्थाओं ने विभिन्न पुरस्कारों से सम्मनित किया है। सितम्बर 1972 से वर्त्तमान समय तक आपकी अध्यापन, लेखन, प्रकाशन एवं शोध यात्रा निरन्तर गतिमान है।

ऐसे मनीषी विद्वान् को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मनित किये जाने पर संस्कृत जगत् में हर्ष की लहर व्याप्त है। स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी, कुलसचिव श्री गिरीश कुमार अवस्थी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० विनोद कुमार, कुलसचिव प्रो० दिनेश भट्ट, प्रो० भोला झा आदि महानुभावों ने हार्दिक बधाई और शुभकमानाएं प्रदान की हैं।

गुरुकुल झज्जर परिवार की ओर से भी आपको हार्दिक बधाई।

- सम्पादक सुधारक

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबू पर्वत

जिला– सिरोही (राजस्थान) का 28वां वार्षिकोत्सव

यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि गुरुकुल आबू का 28वां वार्षिकोत्सव दिनांक 25, 26, 27 मई 2019 (शनि,रवि, सोमवार) को मनाया जा रहा है। इस वार्षिकोत्सव में यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा ब्रह्मचारियों द्वारा शास्त्रार्थ, व्याख्यान, व्यायामादि के प्रदर्शन– इत्यादि अनेक कार्यक्रम आयोजित हैं। वार्षिकोत्सव के इस कार्यक्रम में अनेक संत–महात्मा तथा विद्वज्जन पधारेंगे।

आप अपने परिवार तथा इष्टमित्रों के साथ गुरकुल में सादर आमन्त्रित हैं।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत (सम्बद्ध महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरयाणा) में संस्कृत–साहित्य, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित आदि विषयों के अध्यापन हेतु **अध्यापकों की आवश्यकता है।** कृपया सेवानिवृत अध्यापक महानुभाव ही सम्पर्क करें। आवास, भोजन, गोदुग्ध की नि:शुल्क व्यवस्था के साथ–साथ समुचित मानदेय भी दिया जाएगा। इच्छुक महानुभाव गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव पर दिनांक 25, 26, 27 मई को पधारें।

सम्पर्क सूत्र–

स्वामी धर्मानन्द

8764218881, 9414589510,

8005940943

सुधारक के ग्राहकों और पाठकों से विशेष निवेदन

सुधारक मासिक पत्र के प्रति आस्था और श्रद्धा रखने वाले प्रबुद्ध पाठकों से नम्र निवेदन है कि सन् 1953 से अर्थात् 66 वर्षों से सुधारक पत्र अपने सामर्थ्यानुसार जनोपयोगी लेखों के द्वारा लगातार सुधार का कार्य करता आ रहा है।

यदि आपको इस पत्र की उपयोगिता उचित लगती है तो आप से नम्र निवेदन है कि प्रत्येक ग्राहक और पाठक कम से कम पांच नये ग्राहक बनाकर हमें उत्साहित करने की कृपा करें जिससे समाजसुधार का यह पवित्र यज्ञ विस्तार पाकर अधिक से अधिक मानवों का कल्याण कर सके। इसका वार्षिक शुल्क 150 रुपये तथा आजीवन (अर्थात 12 वर्ष तक) शुल्क 1500 रुपये है। जो सज्जन 20 नये ग्राहक बनायेंगे, उन्हें आजीवन सुधारक नि:शुल्क भेजा जायेगा।

आशा है धर्मप्रेमी और स्वाध्यायशील सज्जन इस निवेदन पर ध्यान देकर कृतार्थ करेंगे।

निवेदक

आचार्य विजयपाल योगार्थी

प्रधान सम्पादक सुधारक

9416055044

अन्धविश्वास की कथा-मानव समाज की व्यथा

महावीर धीर शास्त्री, मो० 9466565162

(अप्रैल 2019 से आगे)

जागरण, कावड़, गणेश, जगन्नाथ, तान्त्रिक– रात को जागरण करने वाले नशा करके डी.जे. में जोर-जोर से चिल्लाते देखे जाते हैं। एक किलोमीटर तक चारों ओर के लोग इस शोर के कारण सो नहीं पाते। छात्र पढ़ नहीं पाते। क्या चिल्लाने से ही देवी प्रसन्न होती हैं? क्या दिन में देवी स्तुति गान करने पर अभिशाप देती है? राजा हरिश्चन्द्र की रानी तारा तथा उसकी बहन रुक्मिणी की झूठी कहानी सुनाई जाती है। जब रुक्मिणी की झोली में मांस का प्रासाद नारियल में बदल गया तो मांस का प्रसाद अब किसी की झोली में नारियल क्यों नहीं बनता? राजा ने अपना प्रिय घोड़ा और प्रिय पुत्र रानी तारा को काटकर दे दिया। रानी ने उन्हें पकाकर देवी का भोग लगाया तथा राजा को खिलाया। माँ ने दोनों को फिर जिन्दा कर दिया। अब देवी के भक्त अपने बच्चों व पशुओं को क्यों नहीं काटकर बलि चढ़ाते और जीवित कर क्यों नहीं दिखाते? जिन मूर्खों ने अज्ञानवश अपने परिजनों की बलि दी वे जीवित नहीं हुए।

1. वर्ष 1972 में दो अप्रैल को दीनानगर (पंजाब) में प्रकाशचन्द्र पिता ने अपने तीन वर्षीय पुत्र की बलि दी। दो बहनों माया और कौशल्या ने टांगें पकड़ी। पिता ने बच्चे का सिर पकड़ा। चाचा परसराम ने दरांती से बच्चे का सिर काटा। सभी पकड़े गए लेकिन न देवी प्रसन्न हुई न बच्चा जीवित हुआ (सार्वदेशिक साप्ताहिक 30.4.1972)

2. सुलतानपुर में एक स्त्री ने पड़ोस के छह वर्षीय बालक की बलि काली देवी को प्रसन्न करने के लिए दी। (दैनिक प्रताप, उर्दू, 26.7.1973)

3. जबलपुर के रूपचन्द ने जूए में जीत के लिए अपने डेढ़ वर्षीय पुत्र के टुकड़े करके देवी शारदा पर चढ़ाए। (दैनिक वीर अर्जुन, दिल्ली 9.4.1975)

4. बरेली से 48 मील दूर एक गांव में एक अन्ध भक्त ने परिवार के छह लोगों को बलि चढ़ा दिया। तब उसके पुत्र ने ऐसे पिता को मार दिया। (दैनिक हिन्दुस्तान, 7.4.1977)

5. भोपाल में एक सिपाही ने देवी को प्रसन्न करने के लिए अपनी जीभ काटकर देवी पर चढ़ा दी। (सरस सलिल अक्तूबर, द्वितीय, 2000)

6. 1997 के फरवरी मास में अमेरिका के एक काली पैंट-शर्ट धारी पन्थ के गुरु मार्शल हर्फ एप्पल व्हाईट ने कहा था कि अभी भगवान् धरती के पास से गुजर रहे हैं। 'हेलवाप' पुच्छल तारे पर विद्यमान हैं, जिससे अभी मरकर मिला जा सकता है। भगवान् से

मिलने के लिए 39 लोगों ने जान गंवा दी थी उन्हें भगवान् आज तक नहीं मिला। जबकि गुरु ने भगवान् से मिलने के लिए जान नहीं गंवाई। शिष्यों को मरवा दिया।

7. सिरसा हरियाणा में स्थित 'धन-धन सतगुरु' डेरे के गुरु 'राम रहीम' ने 400 लोगों को यह कहकर नपुंसक बना दिया कि इससे भगवान् के दर्शन होकर गुरु द्वारा तुम्हारे अन्दर शक्ति आ जाएगी, लेकिन गुरु स्वयं नपुंसक नहीं बना। नपुंसक बनने वालों में किसी को भी भगवान् के दर्शन नहीं हुए। सभी शर्मशार होकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं जबकि गुरु को 25 अगस्त 2017 को गिरफ्तार कर 20 साल के लिए जेल में डाल दिया गया है। गुरु कोई चमत्कार नहीं दिखा पाया।

8. महाराष्ट्र के औरंगाबाद की हिंगोली निवासिनी 'वन्दना मोकले' को तान्त्रिक ने कहा कि ग्यारह बच्चों की बलि देवी को दे दो तब तुम्हें बच्चा हो जाएगा। उसने पांच बालक बूटी सुंघाकर बेहोश कर बारी-बारी से मारे और देवी पर बलि देती रही लेकिन आखिर में पकड़ी गई। तान्त्रिक उसे बचा नहीं पाया (जागरण, 19.3.2010)

9. उत्तर काशी में डबरानी के पास गंगाजल लेने गए तेईस कावड़िये ट्रक पलटने से मारे गए। शिवजी की शक्ति उन्हें बचा नहीं पाई। (जागरण, 2.8.2010)

10. जालन्धर के गुरुद्वारे 'बाबा निहालसिंह' में विदेश जाने की कामना से दूरी के हिसाब से छोटे बड़े जहाज के खिलौने चढ़ाये जाते हैं, लेकिन सबकी कामना पूरी नहीं होती। खिलौने बेचने वालों की कामना जरूर पूरी हो जाती है।

11. महाराष्ट्र के बसई में पत्नी को बीमारी से बचाने के लिए पति ने एक महिला की बलि दे दी लेकिन तान्त्रिक सहित 6 लोग पकड़े गए तब उनका चमत्कार किसी काम न आया। (भास्कर, 15.12.2013)

12. वर्ष 2011 में 105 अमरनाथ यात्री मारे गए। (ट्रिब्यून, 31.7.2012) वर्ष 2012 में 15 दिन के अन्दर-अन्दर 67 यात्री ऑक्सीजन की कमी से मृत्यु को प्राप्त हो गए। अमरनाथ की शक्ति काम नहीं आई। (ट्रिब्यून, 31.7.2012)

13. राजस्थान के अमरपुरा धाम में पूजा कर लौट रहे 33 भक्त दुर्घटना में मारे गए। पटना में छठ पूजा से लौटते 14 श्रद्धालु बांस का पुल गिरने से मरे। (भास्कर, 20.11.2012)

14. ब्रजघाट गंगा स्नान कर लौटते हुए 21 मरे। सांई बाबा के दर्शन करने जा रहे 43 में से 32 मारे गए। वर्तमान व भविष्य की बताने वाले तथा तमन्ना पूरी करने वाले सांई बाबा एक को भी नहीं बचा पाये।

15. 27 अगस्त 2017 को बिहार में गणेश प्रतिमा बहाते हुए आठ बच्चे डूब मरे। गणेश जी ने कोई दया नहीं की। तिलंगाना के मुख्यमंत्री ने 22 फरवरी 2017 को तिलंगाना राज्य बनने की तमन्ना पूरी होने परा राज्य कोष

से 5.45 करोड़ के गहने चढ़ाए जबकि पत्थर के भगवान् ने कुछ नहीं मांगा था। तिलंगाना निर्माण के बाद से प्रदेश में किसानों की समस्या हल नहीं की गई जिससे 2700 किसान आत्महत्या कर गए। तिलंगाना में आठ सौ करोड़ रुपये से राज्य का अलग तिरुपति मन्दिर बनाया जाएगा लेकिन किसानों के कर्ज माफ नहीं किये जा रहे हैं।

16. अनेक पण्डित यज्ञ भस्म व पूजा सामग्री को नदी के धारा के बीच में प्रवाहित करने के लिए कहते हैं जिसके कारण कितने ही लोग नदी में डूबकर मर जाते हैं। जबकि भस्म व पूजा सामग्री पेड़-पौधों व खेतों में डाली जा सकती है।

17. गुजरात के पल्ली महोत्सव में माता पर 4.5 लाख किलो घी चढ़ा दिया जाता है, जो कि सड़कों, गलियों में बह जाता है जबकि वह घी जोत के लिए चढ़ाया जाता है। उससे हवन और जोत लगाई जाये तो प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

18. नाइजीरिया में 11.12.2016 को चर्च की छत के नीचे दबकर 160 अनुयायी मारे गए। ईसा बचाने नहीं आया। पादरी दुष्कर्म में पकड़े जाते हैं। उधर ईसाई सन्तों को असाध्य रोग ठीक करने वाला बताया जाता है तो सबके रोग ठीक क्यों नहीं होते?

19. हज यात्रा में मीनानगर में 2015 के सितम्बर मास में 2121 यात्री मारे गए। अल्लाह ने किसी की जान नहीं बचाई। इसी प्रकार इंडोनेशिया में जुलाई 2016 में ईद के अवसर पर 12 व्यक्ति मरे तथा सड़क दुर्घटनाओं में इस अवसर पर 400 लोग मारे गए। लेकिन अल्लाह ने किसी को भी नहीं बचाया।

इनमें से किसी भी घटना में न देवी प्रसन्न हुई न बच्चे या अन्य जिन्दा हुए। ऐसी अनेक घटनाएं अनेक देशों में होती रहती हैं।

लेकिन ऐसी न देवी हैं न कोई देवता या भगवान् लेकिन फिर भी देखादेखी झूठी बातों में आकर लोग मानव बलि, पशुबलि, फल-फूल, दूध, कपड़े, रुपये, सोना-चांदी आदि देवी-देवताओं व मन्दिरों में चढ़ाते रहते हैं। अनेक जगह देवी पर शराब की बोतल चढ़ाई जाती है। शराब का प्रसाद बांटा जाता है।

कावड़ भी मन:कामना की पूर्ति के लिए लाई जाती है लेकिन किसी की भी कामना की पूर्ति नहीं होती बल्कि हानि होती है। एक गरीब व्यक्ति उधारे रुपये लेकर कावड़ लाने गया। मार्ग में बीमार होकर पड़ रहा। महीने भर में संभाला गया। छह महीने बीमार रहा। ऋण सिर पर चढ़ता गया। कई कावड़िए बीमार होकर तथा कई दुर्घटना में मारे जाते हैं। कोई देवी-देवता नहीं बचाता। कई कावड़िये कावड़ की आड़ में नशीले पदार्थों का धन्धा करते हैं।

(शेष अगले अंक में)

क्या जीवित व्यक्ति की अच्छी-बुरी भावना जड़ पदार्थ में जा सकती है?

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के मासिक पत्र दयानन्द सन्देश के मार्च 2019 के अंक में श्रीगंगाशरण आर्य का लेख प्रकाशित हुआ है। उसका शीर्षक है **चरणस्पर्श का वैज्ञानिक महत्त्व**। इस लेख में चरण स्पर्श सम्बन्धी विचारों पर तो पुनः विचार किया जायेगा। लेख की समाप्ति पर लिखा है–

आर्य संस्कृति में ब्रह्मचारी को स्त्री का बनाया भोजन खाने का निषेध है। क्यों? यहां यही सिद्धान्त कार्य कर रहा है कि जो स्त्री जिन विचारों वाली होगी, रोटी के साथ ब्रह्मचारी में उसके विचार भी प्रविष्ट होंगे। विकार युक्त स्त्री की बनाई रोटी खाने से ब्रह्मचारी में विकार आयेंगे और वह भ्रष्ट होगा। अतः बालकों के गुरुकुलों की पाकशाला में पुरुष ही कार्यरत रहते हैं.....अहो! कितना गम्भीर चिन्तन! कितना भव्य विज्ञान!

समीक्षा–

यहां विचारणीय है कि पुराकाल में ब्रह्मचारी भिक्षा हेतु घरों में जाते थे, उन घरों में महिलायें ही भोजन बनाती थी। आपके कथनानुसार दूषित विचार वाली महिला ने कई रोटियां बनाई होंगी, उनमें से एक रोटी ब्रह्मचारी ने खा ली, वह तो दूषित हो गया, शेष रोटियां उस महिला के पति, पुत्र, पुत्री तथा परिवार के अन्य लोगों ने भी खाई, तो क्या वे सभी भ्रष्ट होगये? या महिला ने दूषित भावना वाली रोटी ही छांटकर ब्रह्मचारी को दी होंगी, जिससे वह भ्रष्ट हो जायेगा?

विचारना चाहिये कि चेतन के विचार चेतन तो ग्रहण कर सकता है वह भी सुनकर या लिखित रूप में पढ़कर। परन्तु चेतन के विचार जड़ पदार्थ ग्रहण कैसे करेगा? क्या विचार ग्रहण करने के साधन आत्मा-मन-बुद्धि आदि किसी जड़ पदार्थ में मिल सकते हैं? यदि नहीं तो उन साधनों के अभाव में जड़ वस्तु चेतन व्यक्ति के भले-बुरे विचारों को कैसे ग्रहण कर सकती है?

यदि ब्रह्मचारी के लिए भोजन स्त्री न बनाकर कोई पुरुष ही बनायेगा तो क्या गारंटी है कि उसका बनाया भोजन पवित्र भावना से बनाया गया ही होगा। उसके द्वारा क्रोध में, दुःखी होकर या विषय वासना से युक्त होकर बनाया गया भोजन ब्रह्मचारी को दूषित नहीं करेगा क्या? होटलों में प्रायशः पुरुष ही खाना बनाते हैं। उनकी भावना से बना भोजन सभी व्यक्तियों को क्या एक ही रूप से प्रभावित करेगा?

जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन। इसका भाव यह नहीं है कि बनाने वाले की भावना उस अन्न में घुस कर खाने वाले का मन भी दूषित कर देगी, अपितु इसका अर्थ यह है कि गला, सड़ा, बासी, तामसिक तथा अभक्ष्य पदार्थों के सेवन से उनका सार भूत मन भी

दूषित बनेगा। इसीलिये तामसिक भोजन का निषेध किया गया है।

यहां कोई महाराजा अश्वपति और ऋषियों वाली घटना को उद्धृत करना चाहे तो वहां भी उसका भाव यह है कि राजा ने किस-किस प्रकार से कैसे-कैसे लोगों से अन्न प्राप्त किया होगा, उनमें कष्ट पाकर अन्न देने वाले लोग भी होंगे। इस प्रकार से प्राप्त अन्न को खाने का निषेध ऋषियों ने किया था, न कि जड़ अन्न में दूषित भाव आ गये हों और उसके खाने से ऋषियों को पाप लगने का भय हो।

यदि जड़ पदार्थ व्यक्ति के मनोनुकूल भाव ग्रहण करने लग जायेंगे तो सद्भावना से चलाई गई तलवार अपने व्यक्ति को नहीं काटेगी, सद्भावना से दिया गया विष भी हानिकारक नहीं होगा। किसी भी जड़ वस्तु को कैसा भी आदेश या विचार दिया जाये तो क्या वह उसे ग्रहण कर लेगा। यदि एक ही रोटी को दो व्यक्ति अलग-अलग भावना से बनायेंगे तो वह रोटी दोनों के भाव ग्रहण करके खाने वाले पर क्या प्रभाव डालेगी?

इसलिये वैदिक सिद्धान्तों की गहन जानकारी के अभाव में अपनी निजी मान्यता को सिद्धान्त रूप में स्थापित नहीं करना चाहिये। निष्कर्ष यह है कि कोई भी जड़वस्तु किसी भी चेतन के विचारों को कभी भी ग्रहण नहीं कर सकती।

–विरजानन्द दैवकरिण
मो० : 9416055702

भारत के राष्ट्रपति द्वारा गुरुकुल झज्जर के विद्वान् स्नातक

डॉ० रघुवीर वेदालंकार का सम्मान किया गया

आर्यसमाज के सुप्रतिष्ठित विद्वान् डॉ० रघुवीर जी वेदालंकार को भारत सरकार द्वारा 4-4-2019 को राष्ट्रपति सम्मान से पुरस्कृत किया गया था इसी उपलक्ष्य में 21-4-2019 को डॉ० रघुवीर के अभिनन्दन का कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम संकल्प आर्य (पुत्र डॉ० रघुवीर वेदालंकार) ने आगन्तुक महानुभावों का सम्मान किया इस अवसर पर आर्ष गुरुकुलों के संचालक माननीय स्वामी प्रणवानन्द जी, सम्माननीय ठाकुर विक्रम सिंह, आर्यसमाज सरस्वती विहार, आर्यसमाज शालीमार बाग, आर्यसमाज रोहिणी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य तथा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी डॉ० रघुवीर के इष्टमित्रों, सम्बन्धियों ने आकर अपनी शुभकामनायें डॉ० रघुवीर जी को अर्पित की। सरस्वती विहार समाज के प्रधान श्री मनचन्दा जी तथा शालीमार बाग समाज के पूर्व प्रधान श्री भूदेव जी ने कहा कि डॉ० रघुवीर इन दोनों आर्यसमाजों के जन्मकाल से इनके सक्रिय सदस्य रहे हैं इनका यह सम्मान हमारे पूरे आर्यसमाज का ही सम्मान है। मनचन्दा जी ने आर्यसमाज की ओर से डॉ० रघुवीर को पगड़ी पहना कर सम्मानित किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री विनय आर्य ने सभा की ओर से प्रतीक चिह्न भेंट करते हुए कहा डॉ० रघुवीर वेदादि शास्त्रों के प्रौढ विद्वान् तथा महर्षि के अनन्य भक्त हैं इनका पूरा परिवार महर्षि दयानन्द का अनुयायी और आर्यसमाज का सेवक है। वेदों के विषय में विरोधियों द्वारा जो कुछ

भी अनर्गल आक्षेप किये जाते हैं। उनको उत्तर देने के लिए हम डॉ० रघुवीर जी को आगे करते हैं। सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि पं० राजबीर जी शास्त्री तथा डॉ० रघुवीर जी ने जिस योग्यता पूर्वक सरल तथा हृदयग्राही शैली में मुझे पाणिनीय व्याकरण का ज्ञान कराया, वह स्मरणीय एवं श्लाघनीय है। **यह राष्ट्रपति पुरस्कार** तथा आर्यसमाज से प्राप्त अन्य अनेक पुरस्कार उन्हें उनकी योग्यता एवं पाण्डित्य के कारण ही प्राप्त हुए हैं।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कहा कि डॉ० रघुवीर जी केवल यहीं पर ही नहीं अपितु अपने ग्रामीण क्षेत्र में भी अपनी विद्वत्ता, कर्मठता एवं सरल निश्छल भाव के कारण सुप्रसिद्ध हैं। इनका जीवन अनुकरणीय है। हम दोनों एक ही क्षेत्र के हैं अतः मुझे इनकी पूर्ण जानकारी है अपने ग्राम में इन्होंने 1976 में ही महर्षि दयानन्द हाईस्कूल की स्थापना की थी जो अब इण्टर कालेज के रूप में ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा की ज्योति जला रहा है।

समारोह के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि डॉ० रघुवीर जी को मैं 1960 से इनके छात्र जीवन से ही जानता हूँ इनका व्यवहार, आचरण तथा विद्या के प्रति अनुराग तभी से हम सभी के लिए अनुकरणीय रहा है। डॉ० रघुवीर जी का पूरा परिवार ही संस्कृतमय है। धर्मपत्नी डॉ० शारदा जी भी सेवा निवृत्त संस्कृत प्रोफेसर हैं, सुपुत्र संकल्प कम्प्यूटर इंजिनियर होते हुए भी संस्कृत बोलता है गुरुकुल पौंधा आदि को जब भो आवश्यकता होती है डॉ० रघुवीर जी अपनी सेवा देते रहते हैं ये मेरे से विद्या में आयु में बड़े हैं मैं इन्हें आप्त पुरुष समझता हूँ इसलिए मैं इनका हार्दिक सम्मान करता हूँ।

सभा में डॉ० रघुवीर जी के सहपाठी डॉ० जौहरीलाल जी, ठाकुर ओमप्रकाश जी, श्रीमती गीता झा, श्रीमती हर्ष आर्या, श्री शिवदत्त जी सेवा निवृत्त चीफ़ इंजीनियर, श्री के.एस.धामा जी, प्रधानाचार्य, प्रो० डॉ० ओमपाल दिल्ली वि०वि०, तपस्वी सुखदेव जी, आदि सज्जनों ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ० रघुवोर जी को शुभकामनाएँ अर्पित की। डॉ० रघुवीर जी के पूर्व छात्र श्री गणेश विद्यालंकार ने गुरु गौरव विषयक गीत गाकर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। सभा का संचालन करते हुए डॉ० देवशर्मा वेदालंकार ने कहा कि डॉ० रघुवीर जी का केवल अकेले का ही नहीं, अपितु पूरे परिवार का जीवन आदर्श एवं आर्य सिद्धान्तों से ओतप्रोत है मैं पारिवारिक स्तर पर इस पूरे परिवार से सुपरिचत हूँ।

अन्त में डॉ० रघुवीर जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि मेरे जीवन की जो भी उपलब्धियाँ है उनमें मेरे माता-पिता मेरे पूज्य गुरुजनों तथा आर्यसमाज का ही योगदान है समूचा आर्यसमाज ही मेरा घर है। यह सम्मान अकेले मेरा नहीं, अपितु समस्त आर्यसमाज का सम्मान है, विद्या का सम्मान है जो यह पगड़ी मुझे पहनाई गयी है इसके गौरव की अभिवृद्धि करता रहूँगा इसे आक्षेप भाजन नहीं बनने दूँगा। **राष्ट्रपति सम्मान की यह पाँच लाख राशि** तथा 20-4-2019 को (कल ही) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा पुणे मं किये गये सम्मान के अवसर पर प्रदत्त 31000/- की राशि तथा इससे पूर्व भी प्राप्त सम्मानों की लगभग एक लाख राशि संस्कृत के प्रचार-प्रसार तथा वेद रक्षा में ही व्यय की जायेगी घर में इसका उपयोग नहीं होगा। मेरा जीवन आर्यसमाज, वेद तथा संस्कृत के लिए समर्पित है। गुरुकुल झज्जर के स्नातक होने के कारण गुरुकुल की ओर से भी हार्दिक बधाई है।

हल्दी घाटी का परिचय और युद्ध

लेखक– आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत), दिल्ली सरकार

हल्दीघाटी परिचय–

यही वह विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। जहां महाराणा प्रत्ताप ने अपने शौर्य से अपनी छोटी सेना द्वारा मानसिंह (अकबर) की अपने से कई गुना बड़ी तथा साधन सम्पन्न सेना के दान्त खट्टे किये थे। यह स्थान उदयपुर नगर से 44 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित है तथा नाथ द्वारा से 10–15 किलोमीटर दूर उदयपुर अजमेर हाईवे से हटकर स्थित है। लेखक पहली बार गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों के साथ, सन् 1992 के दिसम्बर महीने में, जब उदयपुर (गुलाब बाग) का मौलखा महल, जहां स्वामी दयानन्द जी काफी दिनों तक ठहरे थे, सरकार द्वारा आर्यसमाज को सोंपा गया था। उस समय उदयपुर में एक बड़ा सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन में गुरुकुल झज्जर से एक बस तथा एक टैम्पो में गुरुकुल झज्जरवासी गये थे। उस समय लेखक भी उस बस में था तथा मा० निहालसिंह जी (दिसोर खेड़ी) भी उसी बस में थे। जब बस उदयपुर से हल्दीघाटी पहुंची तब वहां सड़क के दाएं तरफ चलने पर एक साधारण नाला दिखाई दिया। मा० निहाल सिंह जी ने बताया कि इसी नाले पर से चेतक राणा को लेकर कूद गया था। यद्यपि वहां पर नाला कूदने लायक गहरा ही नही था।

इसके बाद लेखक निजी यात्रा पर 1996 में फिर हल्दीघाटी गया था, तब भी उक्त नाला थोड़ा–थोड़ा बह रहा था, किन्तु बाद की यात्रा में वह नाला सूखा पाया अब तो उस स्थान पर हल्दी घाटी के युद्ध से सम्बन्धित एक बडा संग्रहालय सा बना दिया है। इसी वर्ष नवम्बर में लेखक फिर अपने परिवार के साथ हल्दीघाटी की यात्रा पर गया तथा उक्त संग्रहालय तथा चेतक की समाधि देखी। अबकी बार हमारे पास समय पर्याप्त था। अत: मैने छोटे बेटे प्रवीन कुमार के साथ उक्त नाला खोजने का निश्चय किया। उस स्मारक से थोड़ा आगे चलने पर सडक के किनारे एक गुफा है जहां एक साधु रहता है। वह साधु बताता है कि इस गुफा में वनवास के समय राणा प्रताप रहा करते थे। जब हमने साधु से नाले के विषय में जानकारी चाही तो साधु ने हमें कहा कि आप थोडी दूर वापिस जाइये रास्ते में एक पुलिया है, यही वह नाला है जहां से चेतक कूदा था। हम गाडी को वापिस लेकर गये तो देखा कि घनी झाडियों में एक नाला बह रहा है। नाला चौडा होते हुए भी उसमें ऐसा स्थान कहीं दिखाई नहीं दिया जहां से घोड़े को कूदने की आवश्यकता पडे।

सड़क पर आगे चलने पर एक और नाला मिला। यही वह नाला है जिस पर से घोडे को कूदना पडा होगा। क्योंकि यह नाला चौडा तथा गहरा भी है। इसके आगे चलने पर दोनों तरफ पहाडी मिली। बीच से पहाडी काटकर मार्ग बनाया गया है। यही असली हल्दीघाटी है। यहां से नाथ द्वारा की तरफ थोडा आगे चलने पर खामनेर नामक वह प्रसिद्ध स्थान (आजकल गांव) है,

जहां हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। युद्ध के तुरन्त बाद ही वर्षा होने के कारण, मरे हुए सैनिकों का रक्त पानी के साथ मिलकर एक तालब में भर गया। यह स्थान खामनेर गांव के साथ सटा हुआ है। इसे वहां की भाषा में ''रक्त-तलाई'' कहते हैं। अर्थात् रक्त का तालाब, वर्तमान में सरकार ने इसे मारबल लगा कर पक्का तथा सुन्दर बना दिया है। इसी के साथ लगता एक क्षेत्र है, जिसे ''बादशाही बाग'' कहा जाता है। इस स्थान पर एक बड़ा पार्क बना दिया गया है।

हल्दीघाटी का युद्ध –

अकबर का प्रसिद्ध सेनापति आमेर (जयपुर) अधीश मानसिंह राणाप्रताप द्वारा किये अपने अपमान का बदला लेने के लिये, एक बडी तथा साधन सम्पन्न सेना लेकर दिल्ली से चलकर अजमेर ठहरा। अजमेर से चलकर वह मांडलगढ एक महीने तक सेना सहित रूका रहा। लेकिन उसको यह निश्चय नहीं हो पा रहा था कि राणा पर आक्रमण किधर से करे। क्योंकि उदयपुरवासी शहर को खाली कर, हल्दीघाटी से कुम्भलगढ तक फैले घोर वनों में चले गये थे। अन्त में मानसिंह सेना लेकर बादशाही बाग के पास आ गया। उस समय महाराणा हल्दीघाटी की पहाडियों पर मौर्चाबन्दी करके बैठे थे। मानसिंह को पास आया देखकर राणा भी पहाडी से नीचे उतर आए। राणा की सेना के तीन भाग थे। उनमें से हरावल दस्ता जो सबसे आगे चलता है, का सेनापति हकीम खां सूर था, जो कि अपनी पराजय का बदला लेने राणा की सेना में सम्मिलित हुआ था। इसकी मूर्ति उदयपुर की पहाडी पर स्थापित है। हकीमखांसूर के नेतृत्व में महाराणा के हरावल दस्ते ने मानसिंह की सेना पर ऐसा जबरदस्त आक्रमण किया कि एक बार तो सारी ही मुगल सेना आगे होकर भाग खड़ी हुई। तभी एक मुगल सरदार ने झूठी घोषणा कर दी कि भागो मत अकबर एक बड़ी सेना लेकर हमारी सहायता के लिये आ रहा है। यह सुनकर भागती मुगल सेना रुक गयी तथा युद्ध भयंकर हो गया। तभी राणा ने मानसिंह को खोज निकाला तथा चेतक को एड लगाई, चेतक ने अपने अगले पैर हाथी पर रख दिये तथा राणा ने भाले का एक भरपूर वार मानसिंह पर किया, किन्तु मानसिंह हाथी के हौदे में लेट गया तथा बच गया, उसका महावत मारा गया। स्मरण रहे उन दिनों हाथी की सूंड़ में तलवार देकर उसे तलवार चलाना सिखाया जाता था। मानसिंह के हाथी के सूंड की तलवार से चेतक का पैर भंयकर रूप से घायल हो गया। तभी मुगलसेना ने राणा को चारों तरफ से घेर लिया तथा राणा का जीवन खतरे में पड गया। जब मन्ना झाला की नजर नजर राणा पर पडी तो वह अपने घोडे को दौडाता हुआ राणा के पास आया तथा राणा से कहा– राणा जी! आप अपना मुकुट मुझे दे दीजिए तथा आप युद्ध क्षेत्र से चले जाइये, यदि आप बच गए तो मेवाड भी बच जायेगा, यदि आप नहीं बचे तो मेवाड़ भी नहीं बचेगा। मन्ना झाला ने राणा के सिर से मुकुट उतार अपने सिर पर रख लिया तथा मुगलसेना ने मन्नाझाला को ही राणा समझ घेरकर मारडाला तथा राणा सुरक्षित युद्ध क्षेत्र से बाहर निकल गये। उस समय बरसात भी हो गई जिससे उस क्षेत्र के नाले में

पानो भर गया। राणा का घोडा चेतक नाले पर से तो कूद गया, किन्तु अधिक घायल होने के कारण उसने प्राण त्याग दिये। जिस राणा की आँखों से बड़े-बड़े संकटों में भी आँसू नहीं आए थे, उस राणा की आंखों में पानी भर आया। बाद में राणा ने उस स्थल पर घोड़े की समाधि बनवा दी। जो अब तक भी विद्यमान है। जब राणा युद्ध क्षेत्र से निकल रहे थे तब दो मुगलों की दृष्टि उन पर पड गई और वे दोनों राणा को मारने की इच्छा से उनके पीछे चलने लगे। राणा के छोटे भाई शक्तिसिंह जो कि मानसिंह की सेना में उपसेनापति था, उसने इन दोनों मुगलों को राणा का पीछा करते देख लिया तब शक्तिसिंह के मन में भ्रातृ प्रेम जाग उठा तथा वह उन दोनों मुगलों को मारने की इच्छा से उनके पीछे हो लिया और उनको गोली से मार कर राणा के पास गया। शक्तिसिंह को देखते ही राणा ने सोचा कि आज शक्तिसिंह भी मौका देखकर मुझे मारने आया है। किन्तु शक्तिसिंह का तो मन बदल गया था। वह दौडकर राणा के पैरों में गिर पडा तथा अपनी गलती के लिये क्षमा मांगी। दोनों भाई कई वर्षों के बाद गले लगे। शक्तिसिंह ने राणा को मुसलमानों वाली घटना सुनाई तथा राणा को एक घोडा देकर वहां से चले जाने के लिये निवेदन किया और स्वयं भी अकबर की सेना में वापिस चला गया। बाद में वह अकबर की सेना को छोड राणा के पास वापिस आ गया।

दोपहर बाद यह युद्ध समाप्त हो गया। दोनों तरफ के हजारों सैनिक इस युद्ध में काम आए। राणा ने अपने घायलों के इलाज का प्रबन्ध किया तथा वीर मन्नाझाला के परिवार को विशेष तौर से सम्मानित किया तथा जागीर प्रदान की। इस युद्ध में किसी पक्ष की हारजीत नहीं हुई। राणा मानसिंह की पकड़ से बाहर जा चुके थे। जब अकबर को यह समाचार मिला तो अकबर ने क्रोध में आकर मानसिंह का दरबार में प्रवेश छः महीने के लिये प्रतिबंधित कर दिया। इसके बाद राणा ने सामने के युद्ध को त्याग, छापामार युद्ध प्रारम्भ कर दिया। जो उनके जीवन के अन्त तक चलता रहा।

इस युद्ध में मृतकों की संख्या के विषय में तथा युद्ध की तारीख के विषय में भी लेखकों के अलग-अलग मत हैं। कुछ लेखक इस युद्ध का दिन 21-6-1576 तथा कुछ 18-6-1576 मानते हैं। प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार इस युद्ध का दिन जुलाई महीने में मानते हैं।

चार पांच किलोमीटर लम्बे इस हल्दी घाटी क्षेत्र को हल्दीघाटी इसलिये कहते हैं, क्योंकि इस क्षेत्र की मिट्टी का रंग हल्दी जैसा है।

इस युद्ध के बाद भी अकबर ने महाराणा को जीवित या मृत रूप में पकडने के कई बडे-बडे प्रयत्न किये किन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सका। बाद में तो तो राणा ने चित्तौडगढ तथा मांडनगढ को छोडकर अपने मुगलों द्वारा जीते सब किले वापिस ले लिये थे। त्यागी, प्रतापी, स्वाभिमानी स्वतन्त्रता प्रेमी वीर महाराण प्रताप को शतशः नमन।

सम्पर्क सूत्र
111/19, आर्यनगर, झज्जर
मो० : 9996227377

ऋतुसम्बन्धी एवं सामान्य रोगों की घरेलू चिकित्सा

1. अम्लपित्त (Acidity)–

भोजन करने के बाद दोनों समय एक-एक लौंग प्रात:सायं चूसने से अम्लपित्त ठीक हो जाता है और अम्लपित्त से होने वाले सभी रोगों में लाभ होता है।

2. कब्ज–

कब्ज होने पर रात्रि सोते समय 5-7 मुनक्के (पानी में अच्छी तरह धोकर साफ कर बीज निकाल कर) दूध में उबालकर खाएँ और ऊपर से वही दूध पी लें। प्रात: खुलकर शौच लगेगा। भयंकर कब्ज में तीन दिन लगातार लें और बाद में आवश्यकतानुसार कभी-कभी लें।

विकल्प–

(क) त्रिफला चूर्ण चार ग्राम (एम चम्मच भर) हल्के गर्म दूध अथवा गर्म पानी के साथ सोते समय लेने कब्ज दूर होता है।

(ख) ईसबगोल की भूसी पानी या 250 ग्राम दूध में भिगो दें और घंटे दो घंटे के बाद उसको खाकर वही पानी या दूध पी लें। पेट साफ हो जाएगा।

(ग) भुनी अलसी (बाजार में भी उपलब्ध) का चूर्ण बना लें और 2-3 चम्मच गुनगुने पानी के साथ प्रात: खाली पेट खा लें। आधा घंटा के बाद ही कुछ खायें पीयें। असरदार दवा है।

3. कमर दर्द-

(क) कमर दर्द हो तो तारपीन (दवा) के तेल की मालिश करें। यह तेल अपने गुणों में अद्वितीय है।

(ख) खसखस और मिश्री- दोनों समभाग लेकर कूट-पीस लें। 10 ग्राम प्रतिदिन खायें और ऊपर से गर्म दूध पी लें, कमर का दर्द जाता रहेगा।

(ग) सरसों का तेल 125 ग्राम, देशी कपूर 30 ग्राम- दानों को मिलाकर शीशी में भरकर धूप में रख दें। कपूर के पिघल जाने पर दवा तैयार है। इसे दर्द के स्थान पर लगाकर मालिश करें।

4. खांसी खत्म करने के लिए–

(क) 10-15 तुलसी के पत्ते और 8-10 काली मिर्च की चाय बनाकर पीने से खांसी, जुकाम व बुखार ठीक हो जाता है।

(ख) आंवले के छिलके सुखाकर चूर्ण बना लें और बराबर मात्रा में मिश्री मिला लें। सुबह ताजे पानी से 6 ग्राम खाएं। पुरानी से पुरानी खांसी ठीक हो जाएगी। अदरक का रस व शहद 10-10 ग्राम बराबर मात्रा में मिलाकर चाटने से खांसी ठीक हो जाती है।

(ग) बहेड़े के छिलके, पीपल छोटी-दोनों बराबर-बराबर लेकर अत्यन्त बारीक पीस लें। इस चूर्ण में से 1 ग्राम लेकर और शहद में मिलाकर रोगी को चटाएँ। खाँसी के लिए अद्भुत दवा है।

(घ) शहद 10 ग्राम में सोंठ 2 ग्राम और कालीमिर्च 1 ग्राम का बारीक चूर्ण मिलाकर प्रात:-सायं चटाने से बलगामी खाँसी दूर होती है।

(च) यदि उपरोक्त सम्भव न हो तो मुनक्का के बीज निकालकर इसमें 3 या 4 कालीमिर्च रखकर चबायें और मुख में रखकर सो जाएँ। पाँच-सात दिन में खाँसी से आराम आ जाएगा। त्रिकटु चूर्ण भी खाँसी और कब्जियत के लिये असरदार दवा है। आधा चम्मच गुनगुने पानी या दूध के साथ ले लें।

यह दीपन-पाचन तथा कब्जियत को दूर कर भूख बढ़ाता है।

5. जोड़ों का दर्द–

सरसों तेल में अजवाइन और लहसुन जलाकर उस तेल की मालिश करने से हर प्रकार का दर्द दूर हो जाता है। बराबर मात्रा में खसखस और मिश्री लेकर चूर्ण बना लें तथा 6 ग्राम चूर्ण को सुबह-शाम खाने और ऊपर से गर्म दूध पीने से कमर दर्द ठीक हो जाता है। राई और अलसी को पीस कर पुल्टिस बना लें। गर्म पुल्टिस को दर्द वाले स्थान पर बांधें। राहत मिलेगी।

6. पीलिया से मुक्ति–

5 तोला मूली के पत्ते का अर्क निचोड़ कर 1 तोला मिश्री मिला लें और बासी मुंह पिएं। यह पीलिया की रामबाण औषधि है, पर इस दौरान हल्दी और दूध नहीं पीना चाहिए। पीलिया में कच्चे पपीते की बिना मिर्च-मसाले की सब्जी तथा पका हुआ पपीता खाएं। 10 ग्राम हल्दी पाउडर में 50 ग्राम दही मिलाएं। इस मिक्सचर को दिन में 2-3 बार लें।

7. सर्दी-जुकाम–

(क) सर्दी-जुकाम के कारण गला बैठने पर रात में 4-5 काली मिर्च बताशे के साथ चबा कर सो जाएं। बंद गला खुल जाएगा और जुकाम भी ठीक हो जाएगा।

(ख) एक कप दूध में 1 चम्मच हल्दी डालकर गर्म करें और फिर जरा-सी शक्कर डालकर पिला दें। कैसा भी जुकाम हो शर्तिया लाभ होगा।

(ग) लौंग 3 नग लेकर 100 ग्राम पानी में पकाएँ। जब आधा पानी रह जाएं तब उतार लें और जरा-सा नमक डालकर पिला दें, जुकाम ठीक हो जाएगा।

8. ब्लडप्रेशर–

गेहूं की बासी रोटी प्रात: काल दूध में भिगो कर खाने से हाई ब्लड प्रेशर सामान्य होता है। तरबूज खाने से हाई ब्लड प्रेशर ठीक हो जाता है।

लो ब्लड प्रेशर के लिए गाजर के रस में एक चम्मच शहद मिलाकर पीयें- समान रक्तचाप हो जाएगा। गाजर का मुरब्बा भी इसमें फायदेमन्द है।

9. वायु गैस (Flatulence)–

पेट में वायु गैस बनने की अवस्था में भोजन के बाद 125 ग्राम दही के मट्ठे में दो ग्राम अजवायन और आधा ग्राम काला नमक मिलाकर खाने से वायु गैस मिटती है। सप्ताह-दो सप्ताह आवश्यकतानुसार दिन के भोजन के पश्चात् लें। तत्काल लाभ के लिए- एक दो लहसुन की फाँकें छीलकर बीज निकाली हुई मुनक्का में लपेटकर भोजन करने के बाद, चबाकर निगल जाने से थोड़े समय में ही पेट में रुकी हवा निकल जायेगी। सर्दी के कारण सारा शरीर जकड़ गया हो और कमर दर्द हो तो वह भी जाता रहेगा।

10. नेत्रज्योति वर्धक–

(क) सौंफ आधा किलो, खाँड आधा किलो-दोनों को बारीक पीसकर मिला लें और सुरक्षित रखें।

(ख) प्रतिदिन नहाने से पूर्व पाँव के अँगूठों में शुद्ध सरसों का तेल मलने से वृद्धावस्था तक नेत्रों की ज्योति कमजोर नहीं होती। यह प्रयोग प्रतिदिन किया जाए तो चश्मा लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

(ग) प्रतिदिन आँखों में एक-दो बूँद सरसों

का तेल लगाएँ इससे आखें सभी प्रकार के रोगों से सुरक्षित रहेंगी और नेत्रज्योति में जीवनभर कोई अन्तर नहीं आएगा।

(घ) प्रातः उठने के बाद ठंडे पानी से भरी बाल्टी में नेत्रों को 5-6 बार डुबाकर रखें और मुँह में पानी भरकर बारी-बारी से आँखों पर छींटे मारें, ताकि चोट न लगे। संभव हो तो नेत्र व्यायाम पाँच-दस मिनट कर लें और सदा स्वस्थ रहें।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए मालिश जरूरी है–

शरीर को जिस प्रकार भूख मिटाने के लिए भोजन जरूरी है, उसी प्रकार शरीर को मजबूत बनाने के लिए कसरत से लेकर न जाने कितनी प्रकार की कोशिशें की जाती हैं। इन्हीं में तेल की मालिश भी शामिल है। यह शरीर को पुष्ट और कांतिमय बनाने के लिए आवश्यक है।

सिर पर तेल मालिश–

जो व्यक्ति सदा सिर में नित्य तेल लगाते रहते हैं तथा उसकी मालिश करते हैं, उन्हें सिर दर्द कभी नहीं होता। उनके असमय बाल भी सफेद नहीं होते, न ही उनके बाल झड़ते हैं।

पैरों में तेल मालिश–

पैरों को हमेशा उपेक्षित किया जाता है, लेकिन पैरों का सौंदर्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है। पैरों के तलवों में मालिश करने से खुरदरापन, जकड़ापन, रूखापन, थकावट व बिवाई फटना आदि समस्याएं नहीं होती। पांव की मालिश करने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। वात रोगों का भी शमन होता है।

मालिश के नियम–

(क) सरसों, तिल या नारियल का तेल मालिश के लिये उपयोगी हैं। मालिश करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि हाथों की गति हर बार हृदय की ओर हो। खाना खाने के तुरंत बाद मालिश नहीं करवानी चाहिए। गर्भवती स्त्रियों को पेट व पेडू पर मालिश नहीं करवानी चाहिए। स्तनों पर भी दबाव नहीं पड़ना चाहिए। बदन में आमतौर पर मालिश नीचे पैरों की ओर से सिर की ओर की जाती है। हृदय को लक्ष्य रखते हैं। सिर व कंधे से मालिश करने पर ऊपर से नीचे की ओर करते हैं। मालिश के बाद थोड़ी देर हल्की धूप में बैठना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। बाद में गुनगुने पानी से नहाना चाहिए। इससे चिकनाई छूट जाती है। बदन को रगड़कर स्नान करें और हाथ से ही पानी सुखाने की कोशिश करें तथा सूखे तौलिये से बदन को साफ कर लें।

(ख) बच्चों की मालिश–

बच्चों की मालिश करते समय ध्यान रखना रखें कि कमरे का तापमान ठीक हो और आपका हाथ भी ठंडा न हो। धीरे-धीरे सामने के सभी अंगों पर हल्का तेल लगाएं और सीने पर धीरे-धीरे मलें। दोनों हाथों से पेट की गोलाई में मालिश करें। दोनों बांहों पर तेल लगाएं और धीरे-धीरे मलें। हथेलियों पर भी गोलाकार मालिश करें। मालिश के बाद थोड़ी देर बच्चे को धूप में खेलने दें, फिर गर्म पानी से नहलाएं।

प्रातः मन्त्र व दिनचर्या–

उठने के बाद प्रातःकालीन मन्त्र और ओ३म् के जप से ध्यान लगावें। स्नानोपरान्त बैठकर ईश्वर की स्तुति, उपासना और प्रार्थना करें और यज्ञ के बाद प्रातराश लेकर अपने काम में लग जावें। सोने के पहले भी ओ३म् का जप और मन्त्र का पाठ करें।

संकलन– लक्ष्मण मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर

आचार अल्प विचार अधिक

काम अल्पतर नाम अधिक है, ग्राम अल्पतर धाम अधिक है।।
तक्र अधिक नवनीत अल्प है, शक अधिक भयभीत अत्य है,
जिक्र अधिकतर जीत अल्प है, फिक्र अधिकतर प्रीत अल्प है,
श्रम थोड़ा आराम अधिक है, – काम अल्पतर...।।1।।

मान अल्प अपमान अधिक है, दान अल्प गुणगान अधिक है,
ज्ञान अल्प अभिमान अधिक है, शान अल्प इन्सान अधिक है,
श्रेय अल्प बदनाम अधिक है– काम अल्पतर...।।2।।

प्यार अल्प दुत्कार अधिक है, सार अल्प निस्सार अधिक है,
तार अल्प विस्तार अधिक है, भार अल्प आभार अधिक है,
श्वेत अल्पतर श्याम अधिक है– काम अल्पतर...।।3।।

वाद अल्प संघर्ष अधिक है, याद अल्प उत्कर्ष अधिक है,
स्वाद अल्प आदर्श अधिक है, ह्लाद अल्प दिग्दर्श अधिक है,
नाद अल्प परिणाम अधिक है– काम अल्पतर...।।4।।

– प्यासा पनघट से

गुरुकुल झज्जर में नया प्रवेश प्रारम्भ

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर में नवीन छात्रों के प्रवेश की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। प्रवेश के इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेश लेने वाला छात्र कम से कम पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिये।

प्रवेश हेतु परीक्षा तिथियां

19 मई 2019 रविवार
2, 16 जून 2019 रविवार
अधिक जानकारी हेतु दूरभाष से सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र

आचार्य
9416055044

कार्यालय
9416661019

ओ३म्

103 वर्षों से मानव सेवा में अहर्निश संलग्न आर्षपाठविधि का नि:शुल्क शिक्षा एवं सुसंस्कारों से युक्त एकमात्र दिव्य मानव निर्माण केन्द्र व स्वामी ओमानन्द सरस्वती की कर्मभूमि

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त) (कक्षा छठी से बारहवीं तक हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी से मान्यता प्राप्त)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर

लिखित प्रवेश परीक्षा तिथि- 19 मई, 2 व 16 जून 2019
अर्थात् मई, जून के प्रथम व तीसरे रविवार को दोपहर 12 बजे होगी।

विशेषताएं

1. आदर्श दिनचर्या एवं कठोर अनुशासन
2. छात्रावास में रहना अनिवार्य
3. सुशिक्षित-सुयोग्य अध्यापक
4. विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास
5. मेधावी विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति
6. प्रतिदिन योग, संध्या-यज्ञ, आसन-प्राणायाम, व्यायाम
7. शुद्ध सात्विक, पौष्टिक भोजन एवं ताजा गो दुग्ध
8. उत्तम स्वास्थ्य हेतु विशेष चिकित्सा सुविधा
9. प्रदूषण रहित खुला, प्राकृतिक वातावरण
10. स्वावलम्बी संस्कारयुक्त तनाव रहित व्यवस्थित जीवन
11. विस्तृत क्रीड़ा स्थल एवं सुयोग्य खेल प्रशिक्षक
12. नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास
13. बीस हजार से अधिक पुस्तकों का विशाल पुस्तकालय
14. शुद्ध पेयजल हेतु RO, कम्प्यूटर, प्रोजक्टर एवं जनरेटर
15. भजन-भाषण, गायन-वादन का क्रियात्मक अभ्यास
16. ऐतिहासिक हरयाणा पुरातात्त्विक संग्रहालय

अत: संस्कारवान् दिव्य सन्तान निर्माण हेतु अपने बालकों को गुरुकुल में प्रतिष्ठ करवायें।

हम आपके बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अहर्निश प्रयत्नशील है।

अधिक जानकारी के लिए नियमावली (प्रोस्पेक्ट) कार्यालय से प्राप्त करें।

झज्जर शहर से तीन किलोमीटर, रेवाड़ी रोड पर पहला ही स्टैंड गुरुकुल का है।

E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

प्रधानाचार्य
आचार्य विजयपाल योगार्थी (9416055044)

कार्यालय
मो.: 9416661019

Acharya Printing Press, Rohtak # 9254053111

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) "	६५०-००
७.	काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९.	दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) "	३५०-००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	२५०-००
११.	योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	२०-००
१२.	सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	२५०-००
१६.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प "	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	१५०-००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (स्वामी दयानन्द)	५-००
२६	व्यवहारभानु (स्वामी दयानन्द)	१५-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	४०-००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह) १-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) "	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४२.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र	२००-००
४६.	प्राचीन भारत के	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्द	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्ध	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

संख्या

श्री _____

स्थ _____

डा _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।